संघे शक्ति कलियुगे

(कलयुग में जाति रहित एकता में ही शक्ति है)

पूर्ण गुरु श्री चन्द्र मोहन जी

चमत्कार जो केवल हिन्दुस्तान की धरती पर है

पूर्ण गुरु : परमात्मा के ज्ञाता |

पूर्ण गायत्री : परमात्मा को इस शरीर में खोजने का परवाना (पासपोर्ट) क्योंकि परमात्मा शरीर में साक्षात् विराजमान है, इसके इलावा परमात्मा को खोजने का और कोई मार्ग नहीं है |

पूर्ण गंगा : परमात्मा का वास्तविक रूप, क्योंकि जल में तरल वायु (लिक्विड ऑक्सीजन) होती है और यही परमात्मा का अंश (गॉड पार्टिकल) है, क्योंकि जल + वायु = जलवायु......इन सब में वायु विध्यमान होती है |

पूर्ण गाय : परमात्मा के बनाएं शरीर को तंदरूस्त व निरोगी रखने का पूरा मेडिकल स्टोर |

पूर्ण गीता : परमात्मा के बनाएं शरीर व ब्रह्मांड के रहस्यों का ज्ञान व उसको खोजने का तरीका | इसको समझने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है और उसके बिना इसे समझना नामुमकिन / असंभव है |

पूर्ण गुरु

पूर्ण गुरु श्री चन्द्रमोहन जी

पूर्ण गुरु: पूर्ण गुरु परमात्मा का प्रतिनिधि होता है और समय-समय पर मानवता के कल्याण के लिए परमात्मा द्वारा अवतार के रूप में उसे धरती पर भेजा जाता है | पूर्ण गुरु को इस शरीर व ब्रहमांड का पूर्ण ज्ञान होता है | इस धरती पर अब तक सात पूर्ण गुरु आए हैं जो है श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण चन्द्र जी, महात्मा बुद्ध, जीसस क्राइस्ट, चैतन्य महाप्रभु, गुरु गोबिन्द सिंह व माधवराव (यह 18वी शताब्दी में पुणे के राजा थे) | पूर्ण गुरु जी का इस समय धरती पर आने का मकसद केवल विश्व परिवर्तन है, यहां से सतयुग का आरंभ होगा यानि कलयुग का अंत | पूर्ण गुरु जी का कार्य पिछले 20 वर्षों से अधिक समय से चल रहा है, जिससे की हमारा देश हिन्दुस्तान व संसार स्वर्ग बन सके | वह तब होगा जब :-

1. गरीबी, भ्रष्टाचार व आतंक ना हो |
2. प्रत्येक नागरिक को भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ सेवाएं, सुरक्षा, पानी, बिजली, व वाहन आसानी से उपलब्ध हो |
3. समाज के प्रत्येक वर्ग विधार्थी, किसान, मजदूर, कर्मचारी व व्यापारी / स्वयं रोजगार करने वालो को आजीविका की गारंटी हो |
4. असहाय जिसमें अनाथ, बूढ़े और विकलांग आते हैं उनका जीवन खुशहाल हो |
5. पढ़ाई, दवाई एक समान साधन सहित फ्री हो, समय बद्ध न्याय हो और ऐसी आरक्षण नीति, जो समाज को जोड़ें नाकि तोड़े | ऐसी व्यवस्था बने जहां आरक्षण की आवश्यकता ही ना रहे |
6. जल ठीक हो, वायु ठीक हो व जलवायु ठीक हो |
7. समाजिक बुराइयां कम से कम हो |
8. देश की संपत्ति जो भूमि के नीचे होती है उसका बंटवारा सब को एक समान मिले |
9. ऐसी राजनीतिक व्यवस्था बने जिसमें केवल वह लोग आ पाए जो वास्तव में देश की सेवा करना चाहते हैं| पुलिस मित्रवत व नौकरशाही प्रजातंत्र व देश को मजबूत करने के लिए हो |

पूर्ण गायत्री

जपा गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्यः धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्

अजपा गायत्री

पहला अक्षर : ओ

दूसरा अक्षर : ?

दूसरे अक्षर का ज्ञान पूर्ण गुरु जी से प्रसाद के रूप में प्राप्त किया जाता है |

गायत्री दो प्रकार की होती है :-

जपा गायत्री :

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्यः धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्

इसको हम सब जानते हैं | लेकिन किसी भी चीज को अगर होठ या जीभ लग जाए तो उसे परमात्मा को अर्पण नहीं किया जा सकता | लेकिन जपा गायत्री के उच्चारण में होठ व जीभ का प्रयोग होता है, इसलिए यह परमात्मा का सच्चा नाम नहीं है |

अजपा गायत्री :

यह गायत्री हमारे सांसों में स्थापित है और इसमें केवल दो अक्षर हैं, एक अक्षर है **ओम** (ॐ - इसमें म मूक है) और दूसरे अक्षर का ज्ञान पूर्ण गुरु जी से प्राप्त किया जाता है | प्रत्येक सांस लेते हुए पहले अक्षर का प्रयोग होता है और प्रत्येक सांस को छोड़ते हुए दूसरे अक्षर का प्रयोग होता है | इसलिए कहा गया:-

सांस सांस में नाम जप, सांस ना वृथा खोए
ना जाने किस सांस का आवन होय या ना होय |

यह वह विधि है जो कृष्ण जी महाराज ने पांडवों को सिखाई थी | इसका प्रमाण, एक स्थान है माणा जो बद्रीनाथ के पास है, आज भी वहां एक पत्थर पर खुदा है | अगर हम किसी कमरे में 10 लोग बैठे हैं और सांस ले रहे हैं, आज तक कभी किसी ने नहीं कहा कि सांस झूठा है |

परमात्मा का सच्चा नाम केवल सांसो में बसा है और इसको पूर्ण गुरु जी से जाना जाता है |

पूर्ण गंगा

पूर्ण गंगा: पूर्ण गंगा परमात्मा का चमत्कार है जो केवल हिन्दुस्तान की धरती पर किया गया और यह है परमात्मा का प्रसाद | इसलिए हमें गंगाजल में नहाना चाहिए ना की गंगा जी में | आज गंगा की पवित्रता केवल गोमुख तक सीमित रह गई है और यह नदी बहुत ही प्रदूषित होती जा रही है क्योंकि लोगों ने इसे पाखंड बना लिया है और इसकी पूजा करने लगे हैं | अगर हम 100 लोगों को भोजन कराएं और एक किलो गंदगी गंगा जी में डाल दें तो इससे हमारे कर्मों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा | हमें अपने जूते उतार कर गंगा जी में जाना चाहिए और गंगा का प्रसाद लेना चाहिए | हमें गंगा जी में स्नान नहीं करना चाहिए बल्कि वहां से पानी लेकर दूर जाकर स्नान करना चाहिए ताकि वह जल दोबारा गंगा जी में ना जाए |

केवल शुद्ध गंगाजल खराब नहीं होता क्योंकि यह परमात्मा का प्रसाद है और परमात्मा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के रुप में विध्यामन है |

जलवायु	**- साक्षात् ब्रह्मा**	- पैदा करने वाला	**G - Generator**
जल	**- साक्षात् विष्णु**	- पालने वाला	**O - Operator**
वायु	**- साक्षात् शंकर (वृक्ष)**	- नाश करने वाला	**D - Destroyer**

जलवायु, जल, व वायु इन सब में वायु होती है इसलिए हम वायु को परमात्मा का अंश (गॉड पार्टिकल) भी कह सकते हैं | जब शरीर से परमात्मा का अंश निकल जाता है तो मनुष्य की मृत्यु हो जाती है | हम भोजन के बिना कुछ दिन रह सकते हैं, जल के बिना कुछ घंटे और वायु के बिना कुछ मिनट भी नहीं |

इसलिए जलवायु, जल, व वायु ही इस जीवन का आधार है और हमें इसकी देख रेख करनी चाहिए क्योंकि जल + वायु = जलवायु | किसी स्थान का जलवायु वहां के जल व वायु की गुणवत्ता पर निर्भर करता है | जल व वायु जितना शुद्ध होगा उतना ही जलवायु अच्छा होगा या इसके विपरीत |

पूर्ण गाय

हिन्दुस्तानी गाय शिवलिंग के साथ

पूर्ण गाय : पूर्ण गाय परमात्मा का भेजा हुआ मेडिकल स्टोर है और बहुत ही अद्भुत चमत्कार भी है | गाय की गर्दन के ऊपर शिवलिंग होता है जो शिव यानि परमात्मा का चिन्ह है इसलिए गाय चमत्कारी है | पूर्ण गाय का दूध, दही, छाछ, घी, मूत्र, गोबर इत्यादि मनुष्य के लिए बहुत लाभकारी है |

1. **गोमूत्र :** यह एंटी एलर्जी, एंटी सेप्टिक, एंटी बैक्टेरिया, एंटी वायरस, एंटी फंगल, एंटी टॉक्सिन, एंटी जर्मस, एंटी इंफेक्शन व एंटी एंटी - इम्यूनिटी होता है | इससे कैंसर, डायबिटीज, रुमेटिक अर्थराइटिस (जो शरीर में सुषुम्ना नाडी के द्वारा विष तत्वों के प्रवेश से होता है) जैसे असाध्य रोग व किडनी व हृदय रोग भी ठीक हो जाते हैं |
2. **घी :** इसको नाक में डालने से मस्तिष्क के रोग नष्ट होते हैं |
   नोट : (गोमूत्र व घी का प्रयोग कब, कैसे और कितना किया जाए उसका तरीका पूर्ण गुरु जी से जाना जाता है|) ईश्वर की कृपा से असाध्य रोग ठीक हो जाते हैं और इससे संबंधित कोई भी कार्य यदि व्यवसाय के रूप में किया जाता है, तो उसका प्रभाव नगण्य होता है। यह काम बिना पैसे के किया जाता है।
3. **गोबर :** इसको कपूर के साथ घर में जलाने से कीटाणुओं का नाश होता है |
4. **गोधूली:** जब गाय चलती है तो जो धूल उड़ती है उसे गोधूली कहते हैं और इसके शरीर पर लगने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं | गाय के शरीर पर हाथ फेरने से भी चर्म रोग ठीक हो जाते हैं |
5. **रम्भाना :** जब गाय आवाज निकालती है तो उसे रम्भाना कहते हैं | इसका प्रभाव मंत्रों के उच्चारण के समान होता है और जो मनुष्य के लिए लाभप्रद होता है|

इसलिए हमें गाय का संरक्षण करना चाहिए और इसके लिए संरक्षण करने वालों को 1000 रुपया प्रति मास सरकार की ओर से दिया जाना चाहिए | इसके साथ साथ गाय और भैंस के कटान पर भी प्रतिबंध होना चाहिए | बछड़ों को जंगल में छोड़ देना चाहिए जिससे उनके मलमूत्र से जंगल हरे भरे होंगे और वह जंगली जानवरों का भोजन बनेंगे | जिससे जानवर शहरों की तरफ नहीं आएंगे, इससे नकली दूध की समस्या व दूध की कमी समाप्त होगी | कुछ ही वर्षों में प्रत्येक युवा को प्रतिदिन लगभग आधा लीटर दूध मिलने लगेगा |

पूर्ण गीता

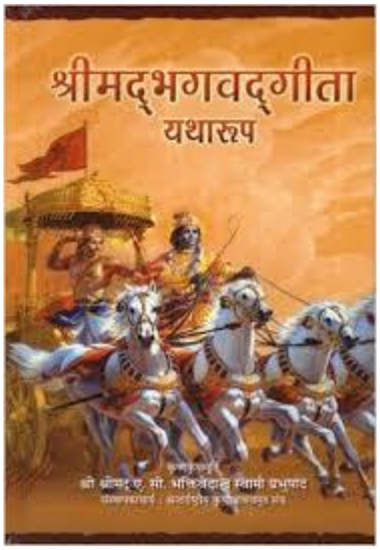

पूर्ण गीता: पूर्ण गीता परमात्मा के ज्ञान का एक माध्यम है | परमात्मा ने इस शरीर को बनाया और इसकी रचना भी की | हमें अपना जीवन किस प्रकार जीना चाहिए, गीता इस पर हमारा मार्ग दर्शन करती है, इसलिए कहा गया :-

यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे व
यथा ब्रह्मांडे तथा पिंडे

जो कुछ इस शरीर में है वह इस ब्रह्मांड में है और जो कुछ इस ब्रह्मांड में है वह सब कुछ इस शरीर में है | हमारा शरीर कैसे कार्य करता है और कर्म कैसे बनते हैं यह एक बहुत बड़ी पहेली है और इसका वर्णन गीता में इस प्रकार किया गया है |

मानव जीवन कैसे जिया जाए और उस के रहस्यों को कैसे खोजा जाए जैसे :-

4.29: चौथे अध्याय के 29वें श्लोक में कहा गया है, प्राण का प्राण में, प्राण का अपान में, अपान का अपान में व अपान का प्राण में हवन कर, इस विधि के द्वारा परमात्मा को खोजा जा सकता है और जो **पूर्ण गायत्री** के द्वारा ही जाना जा सकता है |

13.2: 13वें अध्याय के दूसरे श्लोक में कहा गया है कि हमारे शरीर में दो आत्माएं होती हैं यानि एक आत्मा और दूसरा परमात्मा | परमात्मा का स्थान ब्रह्मरंध्र (वह स्थान जहां चोटी रखी जाती है) और आत्मा का स्थान आज्ञा चक्र जोकि दो भवो के मध्य होता है | इसलिए कहा गया है :-

कोटि कोटि ब्रहमांड का रचनहार जगदीश (परमात्मा),
ऐसा सूक्ष्म रूप धरा आन बिराजा शीश (सिर) |

जब पति-पत्नी मिलते हैं तो एक गेरुऐ रंग का तरल बन जाता है और उसी क्षण परमात्मा अपने आपको सूक्ष्म रुप में स्थापित कर लेता है | उसके कुछ क्षणों के बाद आत्मा प्रवेश करती है और जब परमात्मा व आत्मा दोनों स्थापित हो जाते हैं, तो परमात्मा इस शरीर की रचना स्वयं अपने हाथों से करता है | शरीर का कौन सा अंग कहां होगा, कौन सी उंगली छोटी होगी कौन सी उंगली बड़ी होगी, कौन सी दाएं होगी कौन सी बाएं, यह परमात्मा के इलावा कौन कर सकता है | इसलिए इस शरीर को परमात्मा का बनाया हुआ मंदिर कहा गया और परमात्मा इस में साक्षात् विराजमान है | जब परमात्मा शरीर छोड़ देता है, उसके कुछ क्षणों के बाद आत्मा, तो मनुष्य की मृत्यु हो जाती है |

13.7 : 13वें अध्याय के 7 वें श्लोक में कहा गया है कि मनुष्य का शरीर 24 तत्वों का बना है और उनमें से 15 हैं **भौतिक -** अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश, आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, हाथ, पैर, वाणी, गुदा व लिंग और **सूक्ष्म हैं -** देखना, सुनना, सूंघना, स्वाद, स्पर्श, मन, बुद्धि, चेतना व अहंकार | मृत्यु के बाद 15 भौतिक तत्व नष्ट हो जाते हैं और 9 सूक्ष्म तत्व अपनी प्रवृतियों के साथ आत्मा के सॉफ्टवेयर बनकर शरीर छोड़ देते हैं | अगला जन्म इन्ही 9 प्रवृत्तियों के साथ होता है |

13.35: 13वें अध्याय के 35 वें श्लोक में कहा गया है कि क्षेत्र (शरीर) व क्षेत्रज्ञ (जो शक्ति इस शरीर को चलाती है यानि परमात्मा) उसके अंतर को जानकर मनुष्य का उद्धार निश्चित है |

18.14 : मनुष्य कर्म कैसे करता है इसका वर्णन 18वें अध्याय के 14वें श्लोक में किया गया है | जब 5 - **परमात्मा, आत्मा, शरीर** (अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु व आकाश) **इंद्रियां** (आंख, कान, नाक, जीभ व त्वचा) व **चेष्टा** मिल जाते हैं तो कर्म बन जाते हैं, जो अक्सर समय, काल व परिस्थिति के अनुसार होते हैं | अगर कलयुग चल रहा है तो वैसे होंगे और अगर सतयुग चल रहा है तो वैसे होंगे, लेकिन अपवाद हो सकते हैं |

लेकिन पूर्ण गुरु जी इन कर्मों को काटने का मार्ग भी बताते हैं जिससे मनुष्य मुक्ति की ओर अग्रसर हो सके | मनुष्य का जीवन जन्म, मृत्यु, व मां के गर्भ के चक्र में रहता है | आत्मा जब पहली बार धरती पर आती है तो लगभग 10 लाख साल इस धरती पर इस चक्र (जन्म, मृत्यु, व मां के गर्भ) में रहती है और केवल पूर्ण गुरु जी ही इस चक्र को तोड़ने का मार्ग जानते हैं और पूर्ण गुरु जी से दीक्षा लेकर इस चक्र को तोड़ने का मार्ग जाना जा सकता है |

श्री परमधाम,मेरठ
रमेश कुमार

निष्कर्ष: गाय का संरक्षण **(पूर्ण गाय)**, जल, वायु व जलवायु की देख रेख **(पूर्ण गंगा)**, शरीर के रहस्यों की जानकारी **(पूर्ण गीता)**, परमात्मा को खोजने का मार्ग **(पूर्ण गायत्री)** व एक ऐसा व्यक्ति जो परमात्मा को खोजने का मार्ग जानता हो **(पूर्ण गुरु)** इस ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य का उद्धार निश्चित है |